LOK SABHA

Tuesday, August 10, 1971/
Sravana 19, 1893 (Saka)

———

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

OBITUARY REFERENCE

MR. SPEAKER : I have to inform the House of the sad demise of two of our friends, namely, Shri Dhirendra Kanta Lahiri Chaudhury and Shri M. P. Sinha.

Shri Chaudhury was a Member of the Central Legislative Assembly during the years 1926 to 1947. He passed away at Calcutta on the 3rd August, 1971.

Shri M. P. Sinha was a Member of the Constituent Assembly during the years 1946-50. He passed away at New Delhi on the 9th August, 1971.

We deeply mourn the loss of these friends and I am sure the House will join me in conveying our condolences to the bereaved families.

THE PRIME MINISTER, MINISTER OF ATOMIC ENERGY, MINISTER OF HOME AFFAIRS AND MINISTER OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRIMATI INDIRA GANDHI) : Mr. Speaker, Sir, I share the sentiments of grief which you have expressed. Shri Lahiri's career spans many

events, old and new, of our thimes. He was an associate of my grandfather, Pandit Motilal Nehru. At the time of partition, his home-town went into Pakistan territory. He lived and worked for the people of Bangla Desh. He was one of those who were uprooted from their homes and forced to find refuge in India as a stage in their quest of liberty.

Shri M. P. Sinha, we all knew personally. He was an old and veteran leader of our party in Bihar, who was known all over the nation. He had been in the freedom movement since the thirties. Apart from his political and administrative work, he was interested in the work of *khadi* and many other such programmes.

We express our deepest sorrow and would like you to convey our deep sympathy and condolences to the families of these two patriots.

SHRI DASARATHA DEB : (Tripura East) : Sir, I, expresss our deep sorrow and condolences, on behalf of my party and myself, on the sad demise of these freedom-fighters, whose services have been referred to by the Prime Minister. I request you Sir, to convey our condolences te the members of the bereaved families.

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur) : Sir, I was really shocked when I got a letter from Shri Dhriti Kanto Lahiri Chaudhury, the only son of the late lamented Shri Dhirendra Kanta Lahiri Chaudhury about the death of his father. I had occasion to know this gentleman for a very long time and after he came back from Pakistan, whenever I used to go to Calcutta I used to meet him. During those meetings was told how the stalwarts of our country like Motilal Nehru and others

functioned in Parliment, and in fact that was a source of inspiration for me. He was the Chief Whip of the Congress Party in the Central Assembly after Shri Satya Narayan Sinha was imprisioned for two years. He wanted to remain in India but at the behest of Mahatma Gandhi he preferred to stay in Pakistan and work for the people of Bangla Desh. He was a great friend and companion of the late lamented Maharaja Triloknath Chakravarty. His death is a great loss to our nation and also to those who sincerely believe in parliamentary democracy.

I also associate myself with the sentiments expressed about Mahesh Babu by the Leader of the House. On behalf of my party and myself I express our sincere condolences and I request you to send our condolences to the members of the bereaved families.

श्री श्याम नन्दन मिश्र (बैगूसराय) : अध्यक्ष महोदय, कल भी हम लोगों ने बिहार के एक बड़े विशिष्ट व्यक्ति के निधन के सम्बन्ध में शोक प्रकट किया था, उस समय हम लोगों को थोड़ा भी ध्यान इस का नहीं था कि एक दूसरे बिहार के बड़े व्यक्ति हमारे बीच में कल ही शाम को नहीं रहेगें। आज हम दो व्यक्तियों के—दोनों ही बड़े विशिष्ट व्यक्ति थे—निधन के सम्बन्ध में शोक प्रकट कर रहे हैं।

चौधरी साहब के बारे में, जैसा प्रधान मंत्री जी ने बताया और हमारे मित्र बनर्जी साहब ने बताया, उन का कितना बड़े योगदान हमारे स्वतन्त्रता संग्राम और साथ ही साथ संसदीय कार्यो में रहा है। हम बराबर उन को याद करेगें। लेकिन एक व्यक्ति जिन से मेरा व्यक्तिगत निकटतम सम्बन्ध था और शायद ही कोई बिहार के ऐसे सदस्य होगे जिन का उन के साथ उतना ही निकटतम सम्बन्ध नहीं रहा हो, उन के सम्बन्ध में मैं कुछ कहना चाहूंगा।

आप जानते हैं अब बिहार की वह पीढ़ी जो राजेन्द्र बाबू के सान्निध्य में बढ़ी और उन के कामों का, कांग्रेस के कामों को आगे बढ़ाया, जिस पीढ़ी की हम एक तरह से औलाद हैं, वह पीढ़ी अब हमारे बीच से गुज़र रही है और अब शायद ही एक दो व्यक्ति ऐसे रह गये हों, जो उस ज़माने की याद हम को दिलाते हों। महेश बाबू एक तरह से सार्वजनिक जीवन में पचास सालों से थे और जैसा प्रधान मंत्री जी ने कहा 1930 से तो वे सक्रिय रूप से स्वतन्त्रता संग्राम में लगे हुए थे। मुझे याद है जो कहानियां हम लोग सुनते थे-जब गांधी जी 1930 में वहां गये तो महेश बाबू ने अपने हाथ से उन की हजामत बनाई थी और वे उन के साथ ही ठहरते भी थे। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि यह व्यक्ति एक विशेष प्रकार का व्यक्ति था जिस के इखलाक की मिसाल हमें बहुत कम जगहों पर मिलती है। 70 सालों में शायद महेश बाबू ने 70 आदमियों के दिलों को भी नहीं दुखाया होगा और कोई भी, जो उन का प्रतिस्पर्धी हो, प्रतिपक्षी हो उस का यह कहने का मौका नहीं होता था कि उन्होंने उस के प्रति सदव्यवहार नहीं दिखाया हो। उन्होंने अपनी मुस्कराहट कभी नहीं खोई, अपनी सहनशीलता कभी नहीं खोई। मुझे तो उनकी सहनशीलता की मिसाल कहीं और जगह मिलती नहीं है। वे हमारे बिहार के एक ऐसा नेता थे जिनको प्रायः प्रत्येक गांव को लोग जानते थे, प्रत्येक बालिग उनको जानता था और वे भी प्रायः प्रत्येक गांव को जानते थे। महेश बाबू अपने नाम के ही अनुरूप-महेश का नाम जैसा व्यक्त करता है बहुत सी चीजों में कालकूट पी जाते थे और दूसरे लोगों का उससे बचाव होता था। वे अपने को आगे रखकर खतरा ले सकते थे परन्तु दूसरों को बचाते थे। उनका जीवन जितना नियमित था वैसा नियमित जीवन मैं ने बहुत कम देखा है। घड़ी की सुई के मुताबिक वे काम करते थे। हमें इस बात का ज़रा भी अन्देश नहीं था कि ऐसा नियमित जीवन इतनी जल्दी हमारे बीच से गुज़र जायगा

हालाँकि वे 70 साल के बाद गुज़रे हैं। बहुत दिनों तक बिहार में उनका इकबाल बुलन्द रहा है और आगे भी रहेगा इसमें कोई सन्देह नहीं हैं। बहुत से बादल आते हैं और चले जाते हैं लेकिन जो उनके काम थे वे बराबर हमारे बीच में रहेंगे। मैं तो परिवार के एक सदस्य की तरह से ही उनका था इसलिए मैं कोई औपचारिक रूप से उनके परिवार के प्रति संवेदन करने के लिए यहां पर खड़ा नहीं हुआ हूं। हम सभी प्रार्थना करते है कि उनकी आत्मा को भगवान चिरशांति प्रदान करे और बिहार को बल दे कि दो बड़े नेता जो हमारे बीच से गुज़र गए हैं और जैसी विपत्ति हमारे ऊपर आई है उसको धैर्य के साथ बिहार सहन कर सके।

डा० लक्ष्मीनारायण पांडे (मंदसौर) : अध्यक्ष महोदय, वैसे मृत्यु शरीर का एक अनिवार्य धर्म है फिर भी कुछ महात्माओं, महान आत्माओं या देश के बड़े लोगों की जब असमय में मृत्यु होती है तो वह खलने वाली दुखदाई और आघात पहुंचाने वाली होती है। उसी प्रकार से श्री चौधरी और श्री सिन्हा का देहावसान बड़ा कष्टदायी और आघात पहुंचाने वाला है। इस देश को आगे बढ़ाने में जिस प्रकार की उनकी सेवायें रहीं और इस देश की स्वतंत्रता में जिस प्रकार का उनका योगदान रहा वह छिपा नहीं है। मैं अपने दल की ओर से और अपनी ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप दुःखी परिवारों तक हमारी संवेदनायें प्रेषित करने की कृपा करें।

SHRI G. VISWANATHAN (Wandiwash) : Mr. Speaker, Sir, we are sorry to hear about the demise of another old Gandhian, the stalwart of Bihar, Mr. Dhirendra Kanta Lahiri Chaudhury. Sir, my party also joins the House in expressing our heartfelt condolences to the bereaved family.

SHRI PILOO MODY (Godhra) : Sir, I like to associate myself and my Party with the sentiments expressed in the House and, I hope, Sir, you will convey our deep feelings on losing two of our previous colleagues, to the members of the bereaved families.

PROF. S. L. SAKSENA (Maharajganj) : The generation of freedom fighters who fought with the Gandhian concept of non-violence is nearly passing away. These two great freedom fighters—Mahesh Babu and Shri Dhirendra Kanta Lahiri Chaudhury were our colleagues in the freedom fight. I cannot forget their figures and I was shocked to learn about their demise from the papers. Mahesh Babu was one of the great leaders of Bihar and he was probably one of those people who were in the forefront in the Champaran satyagraha when Mahatma Gandhi went there. I have known him for about a generation and he was so healthy that I did not imagine that he would pass away so early. Please send my condolences to the bereaved families.

SHRIMATI M. GODFREY (Nominated Anglo-Indian) : Sir, although I do not know the deceased Members, on behalf of my group and myself I associate myself with the sentiments expressed by our Prime Minister and other Members of the House and I wish to convey to the bereaved families our deepest sympathies.

MR. SPEAKER : The House may stand in silence for a short while to express its sorrow.

The Members then stood in silence for a short while.

———

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Committee to Look into Wire Thefts and Disruption of Rail Services in West Bengal

+

*1651. SHRI K. MALLANNA :
SHRI R. BALAKRISHNA PILLAI:
SHRI DEVINDER SINGH GARCHA :

Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state :

(a) whether with a view to stopping the wire theft in West Bengal and also to